❍ 22 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *मात-पिता को पूरा फॉलो किया ?*

➢➢ *पूरा नष्टोमोहा बनकर रहे ?*

➢➢ *अपने ऑक्यूपेशन की स्मृति से सेवा का फल और बल प्राप्त किया ?*

➢➢ *गोडली स्टूडेंट स्वरुप स्मृति में रहा ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज निकलती है- 'मेरा बाबा'। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो। हरेक से मेरे-पन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक सहयोगी सेवा के साथी हैं, इसको कहा जाता है-बाप सामान।* इसको ही कहा जाता है कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन।

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं समर्थ बाप की समर्थ सन्तान हूँ"*

〰✧ सदा अपने को समर्थ बाप के समर्थ बच्चे अनुभव करते हो? कभी समर्थ, कभी कमजोर - ऐसे तो नहीं? *समर्थ अर्थात् सदा विजयी। समर्थ की कभी हार नहीं हो सकती। स्वप्न में भी हार नहीं हो सकती। स्वप्न, संकल्प और कर्म सबमें सदा विजयी - इसको कहते हैं 'समर्थ'।* ऐसे समर्थ हो?

〰✧ क्योंकि जो अब के विजयी हैं, बहुतकाल से वही विजय माला में गायन-पूजन योग्य बनते हैं। *अगर बहुतकाल के विजयी नहीं, समर्थ नहीं तो बहुतकाल के गायन-पूजन योग्य नहीं बनते हैं।*

〰✧ *जो सदा और बहुत काल विजयी हैं, वही बहुत समय विजय माला में गायन-पूजन में आते हैं और जो कभी-कभी के विजयी हैं, वह कभी-कभी की अर्थात् 16 हजार की माला में आयेंगे। तो बहुतकाल का हिसाब है और सदा का हिसाब है।* 16 हजार की माला सभी मन्दिरों में नहीं होती, कहाँ-कहाँ होती है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ चाहे अपना पार्ट भी कोई चल रहा हो लेकिन अशरीरी बन आत्मा साक्षी हो अपने शरीर का पार्ट भी देखें। मैं आत्मा न्यारी हूँ, शरीर से यह पार्ट करा रही हूँ। *यही न्यारे-पन की अवस्था अंत में विजयी या पास विद ऑनर का सर्टिफिकेट देंगी।* सभी पास विद ऑनर होने वाले हो?

〰✧ मजबूरी से पास होने वाले नहीं। कभी टीचर को भी एक-दो मार्क देकर पास करना पडता है। ऐसे पास होने वाले नहीं हैं। *खुशी-खुशी से अपने शक्ति से पास विद ऑनर होने वाले। ऐसे हो ना?* जब टाइटल भी डबल विदेशी है तो मार्क्स भी डबल लेंगे ना!

〰✧ भारतवासियों को क्या नशा है? भारतवासियों को फिर अपना नशा है। भारत में ही बाप आते हैं। लन्दन में तो नहीं आते ना। (आ तो सकते हैं) अभी तक ड्रामा में पार्ट दिखाई नहीं दे रहा है। *ड्रामा की भावी कभी भगवान भी नहीं टाल सकता।* ड्रामा को अथार्टी मिली हुई है। अच्छा। (पार्टियों के साथ)

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ मुश्किल है भी क्या? सहज को स्वयं ही मुश्किल बनाते हो। *मुश्किल है नहीं, मुश्किल बनाते हो। जब बाप कहते हैं जो भी बोझ लगता है वह बोझ बाप को दे दो। वह देना नहीं आता। बोझ उठाते भी हो, फिर थक भी जाते हो फिर बाप को उल्हाना भी देते हो क्या करें, कैसे करें। अपने ऊपर बोझ उठाते क्यों हो? बाप आफर कर रहा है अपना सब बोझ बाप के हवाले करो।* ६३ जन्म बोझ उठाने की आदत पड़ी हुई है ना! तो आदत से मजबूर हो जाते हैं, इसलिए मेहनत करनी पड़ती है। कभी सहज, कभी मुश्किल। *या तो कोई भी कार्य सहज होता है या मुश्किल होता है। कभी सहज कभी मुश्किल क्यों?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पुरानी दुनिया से ममत्व मिटाकर, पूरा बलि चढ़ना*"

➳ _ ➳ भगवान जब धरती पर आया... *मेरे लिए अनन्त खुशियां, आसमाँ से लेकर... मेरे दिल आँगन में पधारा*... यह मीठा चिंतन करते हुए मै आत्मा...

मीठे बाबा के कमरे की ओर रुख करती हूँ... और सोचती हूँ, मीठा बाबा जीवन में गर न आया होता... तो मुझ आत्मा को दुखो के जंगल से कौन निकलता... *प्यारे बाबा ने मुझ धूल को अपने मस्तक से लगा दिया है... और सब कुछ करके, मेरे पीछे स्वयं को जेसे छिपा लिया है.*.. मै आत्मा गुणो से सजी रहूँ... मेरा खुबसूरत भाग्य बने... मै विश्व कल्याणी बनकर सतयुग धरा का ताजोतख्त पाऊँ.. यही प्यारे बाबा की चाहत है... *मेरे ऊपर अपना सर्वस्व लुटाकर.... मुझे देवताओ की सुंदरता में ढालना... इतना कुछ मेरे बाबा ने मेरे लिए किया है.*.. मै आत्मा भला क्या मोल चूका पाऊँगी इस चाहत का... बस हर साँस से मीठे बाबा की उपकारी हूँ, ऋणी हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को इस पुरानी दुनिया से ऊँचा उठाकर खुशियो भरे स्वर्ग में ले जाते हुए कहा :-*"मीठे प्यारे फूल बच्चे.... *मीठा बाबा आप बच्चों के लिए सच्ची खुशियो की सौगात, अपनी हथेली पर सजाकर ले आया है.*.. तो अब इस पतित दुनिया से सारा बुद्धियोग हटाकर, सच्चे सुखो को प्रतिपल याद करो... प्यारे बाबा की यादो में खोकर, सच्चे आनन्द में डूब जाओ... यह दुखो के काँटों से भरी दुनिया, आप फूल बच्चों के लिए नही है..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से सच्चे सुख पाकर, आनन्द से भाव विभोर होकर कहती हूँ :-* "ओ मेरे मनमीत बाबा... *सच्चे सुखो के फूल मेरे दामन में सजाकर... आपने मुझे कितना प्यारा और खुशनुमा बनाकर... मेरे जीवन को बेशकीमती बना दिया है..*. ईश्वरीय दौलत को बाँहों में भरने वाली मै अनोखी आत्मा हूँ... मै आत्मा आपके सच्चे प्यार में इस दुखो की दुनिया को भूल गयी हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान रत्नों से निखारते हुए, सतयुगी बादशाही से सजाकर, कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... मीठे बाबा से साथ भरे इस सुहाने वरदानी संगम पर... अपने मन और बुद्धि को, इस दुनिया के जंजालों में अब और न उलझाओ... बुद्धि को समेटकर, प्यारे बाबा की यादो में... गहरे नशे से भर जाओ... *सदा दिव्य दृष्टि से सुख से सजे, मीठे स्वर्ग के अहसासो में खो जाओ... इस पुरानी, विकारी दुनिया से मोह निकाल कर... सिर्फ मीठे बाबा को प्यार करो.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को अपने दिल की गहराइयो में गहरे समाकर कहती हूँ :-* "मेरे मीठे सतगुरु बाबा... *आपने मुझ आत्मा को अपनी सुख भरी हथेलियो पर पालकर, फूलो जैसा सुगन्धित और निर्मल बना दिया है..*. मुझे ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर... इस विकारी दुनिया से मोह भंग करा कर...मुझे विकारो की कालिमा में काला होने से बचा लिया है... मै आत्मा दिल की गहराइयो से आपकी शुक्रगुजार हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को दिव्य दृष्टि देकर बेहद का राज समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... मीठे बाबा ने जो दिव्यता का नेत्र देकर, त्रिकालदर्शी बना दिया है तो अब हद के दायरों से बाहर निकल... दुखो की इस दुनिया से उपराम होकर... *सच्चे सुखो और खुशियो से अपना दिल आँगन सजाओ... सिर्फ प्यार के सागर मीठे बाबा से ही अपना दिल लगाओ.*.. सच्चे बाबा पर दिलोजान से बलिहार हो जाओ...

➳ _ ➳ *मै आत्मा असीम खुशियो में झूमते गाते हुए मीठे बाबा पर दिल से बलिहार होकर कहती हूँ :-* "मीठे जादूगर बाबा... *आपने मेरे जीवन में आकर जो प्यार और खुशियो का जादु लगाया है... जीवन दुखो की सारी सीमाओ को तोड़... खुशियो के अनन्त आसमाँ पर सदा उड़ता ही फिरता है.*..मै आत्मा अब विनाशी रिश्तो से बाहर निकल आत्मिक स्नेह की गंगा बहा रही हूँ... आप पर फ़िदा होकर सब्को आपका दीवाना बना रही हूँ..." प्यारे बाबा पर अपना असीम प्यार उंडेल कर मै आत्मा... इस धरा पर लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पूरा नष्टोमोहा बनना है*"

➳ _ ➳ अपनी श्रेष्ठ मत द्वारा, श्रेष्ठ कर्म सिखला कर जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ परम पिता परमात्मा शिव बाबा का दिल ही दिल मे मैं शुक्रिया अदा करती हूं जिन्होंने मेरे कौड़ी तुल्य जीवन को अपनी श्रेष्ठ मत द्वारा हीरे तुल्य बना दिया। अपनी *मनमत पर और आसुरी मनुष्यों की मत पर चल कर आज तक केवल दुख और निराशा का ही अनुभव किया किन्तु मेरे दिलाराम श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ शिव बाबा ने आ कर मेरे जीवन को सुखी और शांतमय बना दिया*। कदम कदम पर मेरे मीठे बाबा ने मुझे श्रीमत दे कर मेरी हर मुश्किल को सहज बना दिया। अपने प्यारे बाबा की अपने ऊपर असीम अनुकम्पा का अनुभव करते ही मैं खो जाती हूँ अपने दिलाराम शिव बाबा की मीठी यादों में।

➳ _ ➳ मीठे बाबा की मीठी यादें दिल को असीम सुकून देने वाली है, दुःखो से किनारा करवाकर सुखों से भरपूर करने वाली हैं। इस असीम सुख और सुकून का अनुभव करते करते देह से न्यारी हो कर मैं आत्मा *उमंग उत्साह के पंख लगा कर, ऊंची उड़ान भरते हुए पहुंच जाती हूँ अपने दिलाराम शिव बाबा के पास निर्वाणधाम जहां मेरे दिलाराम बाबा निवास करते हैं*। शांति की ऐसी दुनिया जहां पहुंचते ही आत्मा गहन शांति के अनुभव में खो कर तृप्त हो जाती है। उसी शान्तिधाम में शांति के सागर अपने शिव पिता परमात्मा के सानिध्य में आ कर अब मैं आत्मा उनका सच्चा और निस्वार्थ प्रेम पा कर सपष्ट अनुभव कर रही हूं कि झूठी देह और देह के सम्बन्धो से जुड़ा प्रेम केवल और केवल स्वार्थ से भरा है।

➳ _ ➳ अपने दिलाराम मीठे बाबा का निस्वार्थ प्यार पा कर अब मैं देह और देह के सम्बन्धो से सहज ही नष्टोमोहा बनती जा रही हूं। *बाबा का असीम प्यार और दुलार बाबा से आ रही सर्वशक्तियों रूपी किरणों के रूप में निरन्तर मुझ आत्मा पर बरस रहा है*। सर्वशक्तियों की शीतल छत्रछाया मुझ पर निरन्तर सर्वशक्तियों की मीठी मीठी फुहारें बरसा रही है। अतीन्द्रिय सुख के झूले में मैं आत्मा झूल रही हूं। बाबा से असीम स्नेह पा कर, सर्वशक्तियों से भरपूर हो कर अब मैं आत्मा वापिस लौट आती हूँ अपनी साकारी देह में।

➳ ➳ बाबा के प्रेम के रंग में रंगी अब मैं आत्मा देह और देह की दुनिया

में रहते हुए भी स्वयं को इस नश्वर दुनिया से न्यारा अनुभव कर रही हूं। अब मेरे सर्व सम्बन्ध केवल मेरे दिलाराम बाबा के साथ हैं। *उनसे सर्व सम्बन्धों का सुख लेते हुए मैं देह और देह से जुड़े सम्बन्धों से सहज ही उपराम होती जा रही हूं*। देह और देह से जुड़े सम्बन्धों के बीच रहते भी उनसे तोड़ निभाते अब मेरा बुद्धि योग केवल मेरे दिलाराम बाबा के साथ जुटा हुआ है। किसी भी प्रकार का कोई भी बोझ अब मुझ आत्मा को भारी नही बना रहा। *प्रवृति में रहते, ट्रस्टी हो कर हर जिम्मेवारी सम्भालते अब मैं नष्टोमोहा बन हल्केपन का अनुभव कर रही हूं*। अपने प्यारे दिलाराम बाबा के साथ जीवन को जीने का मैं भरपूर आनन्द ले रही हूं।

➳ _ ➳ श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ अपने शिव पिता परमात्मा की श्रेष्ठ मत पर हर कदम चलते हुए अब मैं अपने जीवन को सर्वश्रेष्ठ बना रही हूं। *बापदादा द्वारा मिले ज्ञान, गुणों और शक्तियों के श्रृंगार को धारण कर श्रृंगारीमूर्त आत्मा बन मैं अनेकों आत्माओं को दिव्य गुणों का श्रृंगार कराए उनके कौड़ी तुल्य जीवन को हीरे तुल्य बनाने में सहयोगी बन रही हूं*। बाबा की श्रीमत पर चल भविष्य श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने का तीव्र पुरुषार्थ अब मैं आत्मा निरन्तर कर रही हूं।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अपने ऑक्यूपेशन की स्मृति से सेवा का फल और बल प्राप्त करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा गॉडली स्टूडेण्ट स्वरूप को सदा स्मृति में रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा माया के आने से सदा मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा गॉडली स्टूडेण्ट हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा ने यह भी देखा है कि *कोई-कोई बच्चे छोटी सी बात का विस्तार बहुत करते हैं, इसमें क्या होता है, जो ज्यादा बोलता है ना तो जैसे वृक्ष का विस्तार होता है उसमें बीज छिप जाता है*, वह ऐसे समझते हैं कि हम समझाने के लिए विस्तार कर रहे हैं, लेकिन *विस्तार में जो बात आप समझाने चाहते हैं ना उसका सार छिप जाता है और बोल, वाणी की भी एनर्जी होती है। जो वेस्ट बोल होते हैं तो वाणी की एनर्जी कम हो जाती है। ज्यादा बोलने वाले के दिमाग की एनर्जी भी कम हो जाती है। शार्ट और स्वीट यह दोनों शब्द याद रखो*। और कोई सुनाता है ना तो उसको तो कह देते हैं कि मेरे को इतना सुनने का टाइम नहीं है। लेकिन जब खुद सुनाते हैं तो टाइम भूल जाता है। इसलिए *अपने खजानों का स्टाक जमा करो। संकल्प का खजाना जमा करो, बोल का खजाना जमा करो, शक्तियों का खजाना जमा करो, समय का खजाना जमा करो, गुणों का खजाना जमा करो*।

✺ *ड्रिल :- "अपने खजानों का स्टाक जमा करना"*

➳ _ ➳ *ब्राह्मण कुल की दीपमाला का, मैं नन्हा सा दीप*... अपने अन्दर के तम से लडता हुआ और मुझमें तूफानों से जीतने का ज़ज्बा भरते शिव सूर्य... *स्वीट एन्ड शोर्ट की पल पल प्रेरणा देते*... विस्तार को सार में समाँ लेने की सीख देते और *धडकनों में बस गूँजने लगा है, एक ही गीत... शोर्ट एन्ड स्वीट मेरा बाबा*...

➳ _ ➳ मैं आत्मा बैठ गयी हूँ बापदादा की कुटिया में... बापदादा के ठीक सामने रखा महकतें फूलों का गुलदस्ता... मेरे मन को महका रहा है गहराई से... फूलों की सुन्दरता का सार इनकी खुशबू... और खुशबू का सार... रूहानी आनन्द जो मेरे रोम रोम में बह रहा है... और बापदादा की दिलकश सी मुस्कान को पढने की कोशिश करता हुआ मैं... *मेरी धडकनों का सार है ये... रूहानी निखार है ये... तरसे है कई पतझर जिसे, वो दिलकश बहार है ये*, बापदादा की भृकुटी से आती शिवसूर्य की किरणें मुझमें समाती हुई... और घट की तरह भरपूर होकर छलकता मैं... आकारी रूप में बापदादा के साथ उड चला एक अनोखी यात्रा पर...

➳ _ ➳ *मैं और बापदादा बादलों के विमान पर सवार*... सूर्य के करीब से गुजरता ये विमान सुनहरे रंग में रंगा हुआ... अचानक देख रहा हूँ बापदादा के हाथ में एक स्वर्ण और हीरों से जडी सुन्दर सुराही... बापदादा ने सुराही पर रखी रत्न जडित प्लेट को हटा दिया है... *सुराही के खुलते ही जगमगतें रत्नों का अम्बार लगता जा रहा है...* मानों रत्न उफ़न उफ़न कर बाहर आ रहे है... हैरानी से मैं देखे जा रहा हूँ एक एक कर उन सबको... *देखते ही देखते बडा सा ढेर लग गया है रत्नों का जमीन से आकाश तक... अब बापदादा एक महीन धागे में पिरों रहे है उन सबको... एक एक क्रिया बाबा मुझे दिखाकर कर रहे है... और देखते ही देखते वो सारा रत्नों का ढेर सिमट गया है एक धागें में...*

➳ _ ➳ *मनमनाभव का धागा*... और उस ढेर की जगह बस अब सुन्दर हार... बापदादा ने मुस्कुरातें हुए वो हार पहना दिया है मेरे गले में... *खजाने के विस्तार को सार में समेट दिया है बापदादा ने*... और ये खजानों का स्टॉक अब मेरे अधिकार में... एक एक रत्न की बचत कैसे करनी है मुझे... मनमनाभव के सत्र से सीख लिया है, मैने... *संकल्प का खजाना, बोल का खजाना, शक्तियों

का खजाना, समय और गुणों का खजाना... और सारे खजानों से भरपूर मैं मालामाल आत्मा*... मनमनाभव के जादुई स्पर्श से सार में लाती और *समय संकल्प, बोल, गुण और शक्तियों की बचत करती हुई... अपनी स्थिति से ही परिस्थितियों को बदलती हुई*... वापस लौट आयी हूँ अपनी देह में... दीपमाला का दीपक बन अंधकार पर जीत पाती हुई... दुगुने आत्मविश्वास से...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔